VIII

Page No.

Date 21-5-2020

संस्कृत

प्रथम: पाठ: सुभाषितानि (मधुर वचन)

(1) गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषा: ।
सुस्वादुतोया: प्रभवन्ति नद्य:
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेया: ।

प्रसंग → प्रस्तुत श्लोक हमारी संस्कृत की पाठ्य-पुस्तक 'रुचिरा' भाग- तीन के 'सुभाषितानि' पाठ से लिया गया है। इस श्लोक के माध्यम से गुणवान लोगों की संगति के प्रभाव को दर्शाया गया है-

सरलार्थ → गुणवान लोगों में जो गुण होते हैं वह गुण ही बने रहते हैं। वे ही गुण दुर्जनों के पास जाकर दोष बन जाते हैं। जैसे स्वादिष्ट जल वाली नदियों का जल सागर में मिलकर खारा (न पीने योग्य) बन जाता है।

(2) साहित्य सङ्गीत कला विहीन:
साक्षात्पशु: पुच्छ विषाणहीन: ।
तृणं न खादन्नपि जीवमान:
तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ।

सरलार्थ → साहित्य, संगीत और कला से रहित मनुष्य साक्षात् पशु के समान है, जिसके न सींग और न ही पूँछ। ऐसा मनुष्य घास न खाते हुए भी जीवित है। इससे तो पशुओं का भाग्य ही अच्छा।

(3) लुब्धस्य नश्यति यश: पिशुनस्य मैत्री
नष्टक्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्म: ।
विद्याफलं व्यसनिन: कृपणस्य सौख्यं
राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य ।

सरलार्थ → लोभी व्यक्ति का यश, चुगलखोर की मित्रता, निकम्मे व्यक्ति की विद्या का फल, कंजूस का सुख और पागल मंत्री वाले राजा का राज्य नष्ट हो जाता है।

गृहकार्य → नोटबुक में लिखें ।